P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
Vol-II * Issue-XII*August-2015

ऋग्वेद एवं कुरान का तुलनात्मक अध्ययन–प्रथम

रमेश चन्द वर्मा
विभागाध्यक्ष,
संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी

सारांश

मानव, मेन, इन्सान, आदमी आदि वर्ण समूह द्विपादी प्राणी वर्ग के अभिधान है। ऋषि मनि, फादर, फरिश्ते, पैगम्बर आदि श्रोमान् जागतिक जन समूह को तत्व ज्ञानदाता श्रेष्ठजन का संज्ञाकरण है। सैन्धव आर्य, ईसाई, पारसी, हिन्द, मुस्लिम, आदि शब्द द्विपादियों द्वारा अभिव्यक्त स्वाभिमत के प्रतीक है। यह स्वाभिमत वह धर्म है जिसको अरस्तू ने अफीम की संज्ञा दी है। मूलतः सभी द्विपादी एक ही माला में पिरोये गये विभिन्न मोती है, जिनको बान्धे रखने का सद्कर्म एक ही तत्व करता है, वह है मानव धर्म आदमियत इन्सानितय। इस मानव धर्म का प्रकटीकरण श्रेष्ठजन आब्रह्माण्ड करते रहे है। यह धर्म सार्वभौमिक है, सार्वकालिक है। सृष्टि के अथ से प्रारम्भ हुआ है, इति तक जायेगा। काल की गति न्यारी है। कालान्तर में भाषिक वैभिन्य के कारण इस सनातन धर्म में अभिव्यक्ति वैभिन्य ने जन्म लिया। पृथ्वी के पृथक पृथक परिसर में श्रेष्ठजन ने अपनी अपनी मातृ भाषाओं में मानव धर्म को अभिव्यक्त किया है। वसुधैव कुटुम्बकम् को ध्येय वाक्य मानने वाला मानव पृथ्वी के विषाल परिसर में विस्थापित हुआ। शारीरिक बनावट की विभिन्नता के साथ साथ कबीलाई एवं भाषिक उन्नति का आगाज हुआ। मातृ भाषाऐं अंकुरित हुई। अन्ततः श्रेष्ठजन ने विभिन्न भाषाओं में स्वानुभव सन्देष के रूप में उपदेश के रूप में आदश के रूप में इन्सान को सुनाये। काल की गति रूकती नहीं विकास थमता नहीं। कालान्तर में विकसित मानव ने इन्हीं सन्देशो उपदेशों आदेशों को लिपिबद्ध किया, जिससे हमारे सम्मुख ऋग्वेद बाईबिल और कुरआन जैसे धार्मिक ग्रन्थ समालोचन हेतु उपलब्ध हुये।

मुख्य शब्द : ऋग्वेद, कुरान।

प्रस्तावना

सभ्य सभासद्। मेरे आलेख का विषय भारतीय उपमहाद्वीप के दो प्रमुख पैगम्बरी उपधर्मो के पवित्र ग्रन्थ ऋग्वेद और कुरआन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। विषय नवीन गंभीर तथा संवेदनशील है। दोनों ही पवित्र ग्रन्थ है। अनन्त ज्ञानार्णव ह। इन पर लेखनी चलाना असिंधाराव्रतवत् है। अतः अल्पज्ञ मेरे द्वारा कोई गलती हो जाये तो आप सहृदयगण मुझे क्षमा करें।

ऋग्वेद एवं कुरआन दोनों अपौरूषेय है

विद्वत् परिषद्। ऋग्वेद और कुरान दोनों ही परम्परा में अपौरूषेय माने जाते है। ऋग्वेद का दर्शन ऋषियों ने किया– ऋषयोर्मन्त्रदृष्टारः–तथा कुरान को अल्लाह ताला ने अपने खास फरिश्ते जिबरइल की मार्फत हजरत मुहम्मद के हृदय में आसमान से उतारा। इन दोनों आसमानी ग्रन्थों का यह अपौरूषेयत्व तात्विक है, अर्थात् जो तत्व ज्ञान इनमें है वह पौरूषेय नहीं है। पुरूषकृत आदमी द्वारा बनाया हुआ मैन मेक्ड नहीं है। वह अपौरूषेय है, सार्वभौमिक है, सार्वकालिक है, ईश्वर कृत है। अल्लाह द्वारा भेजा हुआ है। परन्तु हम जिन ग्रन्थों के माध्यम से इस अपौरूषेय तत्वज्ञान का श्रवण मनन समालोचन करते है उन ग्रन्थों में लिखे शब्द वाक्य ऋचा आयत तो किसी न किसो यन्त्रा में छपे है, जिनको मानव ही बनाता है। कहना यह कि अपौरूषेय तत्वज्ञान का हम अनुभव तो कर सकते है, लेकिन उसका समालोचन करने के लिये तो पौरूषेय साधनों की आवश्यकता होगी। अतः आलोच्य ग्रन्थों का तत्वज्ञान तो अपौरूषेय है। परन्तु उनमें लिखित शब्दावली पौरूषेय है।

ऋग्वेद एवं कुरआन का आकृतिगत साम्य

ऋग्वेद का विभाजन त्रिस्तरीय मण्डल सूक्त एवं ऋचाओं में है वैसे ही कुरआन का विभाजन भी पारा सूरा एवं आयत के रूप में त्रितरीय ही है जो इनके आकृतिगत साम्य को दर्शाता है।

ऋग्वेद कुरआन

1. मण्डल – 10 पारा – 30
2. सूक्त – 1028 सूरा – 114
3. ऋचा – 10000 आयत – 5065

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-XII*August-2015

ऋग्वेद एवं कुरआन का विषयगत साम्य

ऋग्वेद का प्रारम्भ अग्नि देव की स्तुति से होता है–अग्निमीले पुरोहितम्–वैसे ही कुरआन के अनुसार हजरत मुहम्मद को प्रथम बार इलहाम–ईश्वरीय संदेश प्राप्त हुआ उसमें भी अग्नि के आदि स्त्रोत रवि अर्थात् सूर्य की उपासना की गयी है– इकरा बिषमीहि रब्बिका–

ऋग्वेद की अन्तिम ऋचा मानव समता का आदेश देती है–

समानी वः आकृतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।

ऋग्वेद 10.191

इसी प्रकार कुरआन की आखिरी आयत मानव ही नहीं मानवेतर जिन्नों में भी रब के शरणागत होने का संदेष प्रदान करती है–

मैं शरण लेता हूँ। मनुष्यों के रब की जो जिन्न में से भी होता है और मनुष्यों में से भी।

कुरआन 114.6

दोनों ग्रन्थों में सृष्टिकर्तागत मान्यतायें समान है

ऋग्वेद के प्रारम्भ में अग्नि इन्द्र आदि एक देववाद के दर्शन हाते है। मध्य के सूक्तों में यम अग्नि मातरिष्वा विश्वेदेवा आदि बहुदेववाद को ऋषियों ने मान्यता दे दी है। अन्त में पुनः एकदेववाद की स्थापना के साथ ऋग्वेद का समापन होता ह, जबकि कुरआन में तो प्रारम्भ से अन्त तक एक ही–रब–को प्रभु सृष्टिकर्ता पालनहार मानकर एक देववाद की पुरजोर शब्दों में स्थापना की गई है। सुधि परिषद। आलोच्य ग्रन्थों में असमानताऐं भी बहुतायत से है जिनमें से प्रमुख इस प्रकार हैः–

रचना की दृष्टि से कालगत पौर्वापर्य

ऋग्वेद का रचनाकाल 2000 ईस्वी पूर्व तो कम से कम माना ही जाता है। इसके वर्तमान स्वरूप के सम्पादक भी महाभारत के रचयिता कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास है। वेदान् विव्यासयति इति वेदव्यासः– जबकि कुरआन के दृष्टा का जन्म 570 ईस्वी में हुआ जिनको 610 ईस्वी में पहली बार हिरा की गुफा मदीना में बौद्धत्व की प्राप्ति हुयी। अतः कालिक दृष्टि से ऋग्वेद पूर्वकालिक है और कुरआन उत्तरकालिक।

ऋचा व आयत में संख्यात्मक वैभिन्य

ऋग्वेद में प्रार्थना का माध्यम ऋचायें है जिनकी संख्या लगभग 10000 हजार है जबकि कुरआन मे इबादत आयतों के द्वारा अभिव्यक्त है, जिनकी संख्या लगभग 5065 है।

दोनों ग्रन्थों में वैषयिक वैभिन्य

ऋग्वेद में मूलतः देवों को स्तुतियां वर्णित है तथा यज्ञ नामक सामाजिक संस्था की स्थापना है, जबकि कुरआन में एक ही अल्लाह प्रभू सृष्टा की भक्ति पर जोर दिया गया है, जिसके सामने रोजे आखिरत परलोक में संसार के सभी प्राणियों को उपस्थित होना है। ऋग्वेद में यम नियम ध्यान धारणा का वणन है तो कुरआन में नमाज रोजा जकात और हज इन चार क्रियात्मक सिद्धान्तों का वर्णन है।

सामाजिक संसद्। मैं आपके समक्ष कुरआन के 114 सूरों का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर रहा हूं जो मेरे द्वारा दिये उपर्युक्त साम्य व वै"ाम्यों को प्रकट करते है, तथा यह दृ"टि भी देते है कि कालिक रूप से परवर्ती होते हुये भी मूलतः वे ही विषय आये है जो ऋग्वेद में है। मात्र भाषा का फर्क है भाव वही है। अनुसन्धित्सु वर्ग इन विषयों का अनुसंधान करें तथा पाठक वर्ग तक यह सन्देश पहुंचाये कि सभी धर्म ग्रन्थों का मूल भाव एक ही है – मानवता, इन्सानियत न हि मानु"ात् श्रेष्ठतर हि किंचिद्।

मस ब एक है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी में रक्त एक जैसा है, फिर परस्पर कलह क्यों करें, असीम शक्ति की सत्ता स्वीकार कर आपस में मिलजुल कर रहें, नेक इन्सान बनें, भले मानश बनें।

नेक नेक सब एक है एक एक नहीं नेक।
वो नेकों में नेक है जिसकी उस पर टेक।।

क्र.सं.	सूरा का नाम	प्रकृति	प्रत्यय	हिन्दी अर्थ
001	अल् फातिहः	अरबी	उभयपदी	मुर्दे की नियोज श्राद्ध
002	अल बकरा	अरबी	पुर्ल्लिंग	गाय/बैल
003	आले इमरान	अरबी	पुर्ल्लिंग	आबादी/जनसंख्या
004	अन निसा	अरबी	स्त्रीलिंग	स्त्रियां/औरतें
005	अल माइदः	अरबी	पुर्ल्लिंग	खानों से भरा स्थान
006	अल अनआम	अरबी	पुर्ल्लिंग	जनता/अवास/सर्वजन
007	अल आराफ	अरबी	पुर्ल्लिंग	स्वर्ग–नरक का मध्य सीन
008	अल अनफाल	अरबी	स्त्रीलिंग	शकुन/शगुन
009	अत तौबा	अरबी	स्त्रीलिंग	पश्चाताप/त्याग
010	यूनुस	अरबी	स्त्रीलिंग	एक सन्देशवाहक/पैगम्बर
011	हूद/हूदः	फारसी	पुर्ल्लिंग	सत्य/ठीक/लाभ/फाइदा
012	यूसुफ	अरबी	पुर्ल्लिंग	एक सुन्दर पैगम्बर
013	अर रअद	अरबी	पुर्ल्लिंग	फेरना/वापस करना/नापसन्द करना
014	इबराहीम	अरबी	पुर्ल्लिंग	सन्देशवाहक जिनको आग में जलाने का यत्न किया गया।

015	अल हिज्र	अरबी	पुल्लिंग	वियोग / विरह / जुदाई
016	अन नह्ल	अरबी	पुल्लिंग	पद्धति / शैली / ढंग
017	बनी इसराईल	अरबी	पुल्लिंग	यहूदी / यहूदियों की उपाधि
018	अल कह्फ	अरबी	पुल्लिंग	गर्त / गुफा / खोह / कन्दरा
019	मरयम	अरबी	स्त्रीलिंग	हजरत ईसा की माता
020	ता–हा	फारसी	अव्यय	तो भी / फिर भी
021	अल अम्बिया	फारसी	पुल्लिंग	प्रसिद्धफल / आम / रसाल
022	अल हज	अरबी	पुल्लिंग	आनन्द / मजा / सुख / हिस्सा / भाग
023	अल मोमीनून	अरबी	पुल्लिंग	मुसलमान मर्द
024	अन नूर	अरबी	पुल्लिंग	प्रकाश / ज्योति / आभा / षोभा / रोषनी
025	अल फुरकान	अरबी	पुल्लिंग	कुरआन
026	अश शुअरा	अरबी	पुल्लिंग	शाइर का बहुवचन / कविगण
027	अन नम्ल	अरबी	पुल्लिंग	पीपिलिका / चींटी
028	अल कसस	अरबी	पुल्लिंग	हिस्सा कहना / कहानी सुनाना
029	अल अन्कबूत	अरबी	स्त्रीलिंग	मकडी / लूता
030	अर रूम	अरबी	पुल्लिंग	एक देश का नाम
031	लुक्मान	अरबी	पुल्लिग	वैद्य / वैज्ञानिक, कुरआन में चर्चा
032	अस सजदा	फारसी	पुल्लिंग	माथा टेकना / सर झुकाना
033	अल अहजाब	अरबी	पुल्लिंग	हिज्ब का बहु / दल, पार्टियां
034	सबा	अरबी	पुल्लिंग	यमन का एक शहर जो हजरत सुलेमान को दहेज में मिला था।
035	फातिर	अरबी	पुल्लिंग	सृष्टिकर्ता, ईष्वर
036	यासीन	अरबी	स्त्रीलिंग	कुरान की एक आयत जो मरते समय मुसलमान को सुनाई जाती है।
037	अस साफ्फात	अरबी	वि.	अन्तः शुद्ध, पवित्रा मनस्क, पाकबातिन
038	सॉद	अरबी	वि.	शुभ, मुबारक, श्रेष्ठ, अरबीका 14 वॉ वर्ण
039	अज जुमर	अरबी	पुल्लिंग	दुबलापन, क्षीणता

040	अल मोमिन	अरबी	पुल्लिंग	मुसलमान मर्द
041	हा–मीम	अरबी	वि.	पक्षकार, मददगार,मित्रा, दोस्त
042	अश शूरा	अरबी	पुल्लिंग	परामर्श, सलाह, विचार विनिमय
043	अज जुखरूफ	अरबी	स्त्रीलिंग	सूर्य, रवि, प्रातःकाल, भग्न, खण्डित, टुकडे
044	अद दुखान	अरबी	पुल्लिंग	धूम्र, भाप, वाष्प
045	अल जासिया	अरबी	पुल्लिंग	गुप्तचर, अपसर्पक, मुखबिर, प्रतीष्क, चार
046	अल अहकाफ	अरबी	वि.	जो बहुत अधिक हकदार हो
047	मुहम्मद	अरबी	थ्व.	प्रशंसित, स्तुत, हजरत पैगम्बर का नाम
048	अल फतह	अरबी	स्त्रीलिंग	विजय, जीत, सफलता, कामयाबी
049	अल हुजुरात	अरबी	पुल्लिंग	उपस्थिति, विद्यमानता आमना सामना
050	काफ	फारवी	वि.	सारा संसार, जगत, सारी दुनियां
051	अज जारियात	अरबी	स्त्रीलिंग	दासी, लौण्डी, नौका नाव
052	अत तूर	अरबी	पुल्लिंग	शाम–सीरिया का एक पहाड जिस पर हजरत मूसाने अल्लाह देखा
053	अन नज्म	अरबी	पुल्लिंग	तारा, उडुप, सितारा
	अन नज्म	अरबी	स्त्रीलिंग	पद्य, काव्य, व्यवस्था, प्रबन्ध, शाइरी
054	अल कमर	अरबी	पुल्लिंग	चान्द चन्द्र, राकेश, शशि
055	अर रहमान	अरबी	वि.	दयालु, कृपालु, ईश्वर का एक नाम
056	अल वाकिया	अरबी	पुल्लिंग	घटना, हादिसा, खबर, दुर्घटना, वृत्तान्त
057	अल हदीद	अरबी	पुल्लिंग	लौहा, फौलाद, तेज और धारदार पदार्थ
058	अल मुजादला	अरबी	पुल्लिंग	युद्ध, लडाई, वाद विवाद
059	अल हश्र	अरबी	पुल्लिंग	कियामत महाप्रलय, आपत्ति, विपदा

060	अल मुम्तहिना	अरबी	वि.	इम्तिहान लेने वाला, परीक्षक
061	अस सफ्फ	अरबी	स्त्रीलिंग	नमाज में लगी लम्बी लाईन अवलि, पंक्ति

062	अल जुमुआ	अरबी	पुर्ल्लिंग	शुक्रवार
063	अल मुनाफिकून	अरबी	स्त्री.	बहुमुख जिनके मुंह में कुछ और हो, पेट में और
064	अत तगाबुन	अरबी	पुर्ल्लिंग	एक दूसरे को घाटा पहुंचाना, टोटा देना
065	अत तलाक	अरबी	स्त्री.	विवाह विच्छेद, मियॉ बीबी को अलग करना
066	अत तहरीम	अरबी	पुर्ल्लिंग	बहादुरी, वीरता, जवॉमर्दी
067	अल मुल्क	अरबी	पुर्ल्लिंग	देष, राष्ट्र, सल्तनत, जन्म भूमि
068	अल कलम	अरबी	पुर्ल्लिंग	लेखनी किल्क, काटाहुआ, पेड की कटी हुई डाली
069	अल मुआरिज	अरबी	पुर्ल्लिंग	मेराज का बहुबचन, सीढियॉ
070	नूह	अरबी	पुर्ल्लिंग	एक पैगम्बर जिनके समय में पानी का बडा तूफान आया, जिससे संसार नष्ट हो गया, कुछ आदमी बचे, जिनकी सन्तान इस समय है।
071	अल जिन्न	अरबी	पुर्ल्लिंग	जिन्न का बहुवचन, अग्नि से उत्पन्न अदृष्य प्राणी
072	अल मुज्जम्मिल	अरबी	वि.	कुरान की एक आयत
073	अलमुद्दस्सिर	अरबी	स्त्री.	दवा लेने वाली स्त्री, वादिनी
074	अल कियामह	अरबी	पुर्ल्लिंग	अस्थायी निवास, निश्चय, नमाज में खडे होना।
075	अद दह्र	अरबी	पुर्ल्लिंग	काल, समय, वक्त, युग
076	अलमुरसलात	अरबी	वि.	जडाउ, सुसज्जित, संस्कृत, आरास्त, जटित
077	अन नबा	अरबी	स्त्री.	जमीन से उगने वाली सब्जी, पेड पौधे
078	अन नाजिआत	अरबी	वि.	मुक्ति पाने वाला, मुक्त, नजातयाफता

079	अ ब स	अरबी	वि.	व्यर्थ, निरर्थक, फजूल, बेकार
080	अत तकवीर	अरबी	स्त्री.	शक्ति देना, बली बनाना
	तक्वीर	अरबी	स्त्री.	अल्लाहो अकबर कहना
081	अल इनफितार	अरबी	पुर्ल्लिंग	टुकडे टुकडे होना, पैदा करना
082	अल मुतफिफीन	अरबी	वि.	बहुत से फन जानने वाला
083	अल इनषिकाक	अरबी	पुर्ल्लिंग	फट जाना, तडकना, शक होना
084	अल बुरूज	अरबी	पुर्ल्लिंग	प्रकट होना, निकलना
085	अत तारिक	अरबी	पुर्ल्लिंग	दुर्घटना, प्रातः कालिक तारा, इस्लाम का प्रसिद्ध सेनापति
086	अल आला	अरबी	वि.	सबसे अच्छा, उत्तम
087	अल गाषियह	फारसी	पुर्ल्लिंग	कियामत, महाप्रलय, नरक की आग, भीतरी रोग, बह कपडा जो घोडे के चार जामे पर पडता हो।
088	अल फज	अरबी	स्त्री.	प्रातः काल, भोर, सवेरा, सवेरे की नवाज
089	अल बलद	फारसी	पुर्ल्लिंग	पथ प्रदर्शक, रहनुमा, नेता
090	अष शम्स	अरबी	पुर्ल्लिंग	मिहिर, मार्तण्ड, रवि, अरूण, तरणि
091	अल लैल	अरबी	स्त्री.	रात्रि, यामिनी, क्षपा
092	अज जुहा	अरबी	पुर्ल्लिंग	जाहिल का बहुवचन, जाहिल लोग
093	अल इनषिराह	अरबी	पुर्ल्लिंग	हृदय का खुलजाना, चित्त की प्रसन्नता, मुसर्रत
094	अत तीन	अरबी	पुर्ल्लिंग	इंजीर, एक प्रसिद्ध फल
095	अल अलक	अरबी	स्त्री.	जौंक, रक्तपा, जलौका, जमा हुआ रक्त प्रेम या शत्रुता जो छूटे नहीं
096	अल कद्र	अरबी	स्त्री.	आदर, सत्कार, आवभगत, सम्मान, प्रतिष्ठा, इज्जत
097	अल बैयिनह	अरबी	वि.	स्पष्ट, वाजेह, ज्वलन्त

098	अज जिलजाल	अरबी	पुर्ल्लिंग	जिल–छाया, साया, परछाई जाल–कट्ता, जालसाजी, फरेब
099	अल आदियात	अरबी	वि.	अभ्यस्त, अनुसेवी, व्यसनी
100	अल कारिआ	अरबी	पुर्ल्लिंग	दुर्घटना, हादिसा
101	अत तकासुर	अरबी	पुर्ल्लिंग	प्रचुरता, बहुतायत
102	अल अस्र	अरबी	पुर्ल्लिंग	समय, काल, सूर्यास्त से पूर्व का समय, नवाज
103	अल हुम जह	फारसी	पुर्ल्लिंग	हमा–उर्दू और फारसी साहित्य का एक कल्पित पक्षी, जिसकी छाया पड जाने से मनुष्य राजा हो जाता है। यह केवल हडिडयां खाता है। जह–वीर्य, शिशु, जनीन, भ्रूण, नुत्फ
104	अल फील	फारसी	पुर्ल्लिंग	हाथी, करि, गज, सिधुर, पीलु, पील
105	करैष	अरबी	पुर्ल्लिंग	बहुत कडा जाडा, पुरानी और जीर्णवस्तु
106	अल माउन	अरबी	वि.	विकृत, दूषित, बिगडा हुआ
107	अल कौसर	अरबी	पुर्ल्लिंग	स्वर्ग का एक कुण्ड या हौज
108	अल काफिरून	अरबी	पुर्ल्लिंग	सत्य को छिपानावाला, ईश्वर प्रदत्त ने मतों पर कृतज्ञता प्रकट करने वाला, नदी, दर्या, कृषक, प्रेमपात्र, माशूक
109	अन नस्र	अरबी	स्त्री.	ग़द्य, इबारत, एक बुत जा अरब में पूजा जाता था, सहायता
110	अल लहब	अरबी	पुर्ल्लिंग	आग की लपट, अग्नि ज्वाला, शोला, अग्नि शिखा
111	अल इखलास	अरबी	पुर्ल्लिंग	निश्छलता, निष्कपटता, खुलुस, सच्चाप्रेम
112	अल फलक	अरबी	पुर्ल्लिंग	आकाश, गगन, अम्बर
		अरबो	स्त्री.	सवेरे का उजाला, उषा
113	अन नास	अरबी	पुर्ल्लिंग	एक आदमी, बहुत से आदमी

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद भाषा भाष्य, दयानन्द सरस्वती, वैदिक पुस्तकालय दयानन्द आश्रम अजमेर 1963
2. ऋग्वेद संहिता भाषा भाष्य, जयदेव शर्मा, आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड अजमेर 1982
3. पवित्र कुरआन सुगम हिन्दी अनुवाद, मुहम्मद अहमद, मधुर सन्देश संगम जामिआ नगर नई दिल्ली 2009
4. संस्कृत हिन्दी कोष, वी एस आप्टे, मोती लाल बनारसी दास दिल्ली 1984
5. उर्दू हिन्दी शब्द कोष, मुहम्मद मुस्तफाखॉ, उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान एमजी मार्ग लखनऊ 1982
6. अगजी हिन्दी कोष, फादर कामिल बुल्के, एस चन्द एण्ड कम्पनी लि. श्रामनगर नई दिल्ली 1997